क्या बंदर अपना अक्स पहचानते हैं?

ऐसा कहते हैं कि आइने में अपना प्रतिबिंब पहचान पाना उच्चतर संज्ञान क्षमता का परिचायक होता है। यह क्षमता सिर्फ इंसानों और कुछ अन्य अत्यंत बुद्धिमान प्राणियों में पाई जाती है। अब *करंट बायोलॉजी* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि मैकॉक बंदरों में भी यह क्षमता पाई जाती है।

वैसे अब तक किए गए अध्ययनों में यह पता चल चुका है कि चिम्पैंज़ी, ओरांगुटान, डॉल्फिन, हाथियों और शायद मैगपाई में यह चेतना होती है कि वे आइने में अपना अक्स देखकर यह पहचान सकें कि यह उन्हीं का प्रतिबिंब है। आज तक किए गए अध्ययनों का निष्कर्ष यही था कि बंदरों में यह समझ नहीं होती।

अब चीन के शंघाई इंस्टीट्यूट ऑफ बायोलॉजिकल साइन्सेज़ के नेंग गोंग और उनके साथियों ने दावा किया है कि बंदर अपना अक्स पहचान लेते हैं। गोंग और उनके साथियों ने कुछ मैकॉक बंदरों को आइने के सामने बांध दिया और उनके चहरे पर एक अत्यंत दुर्बल लेज़र पुंज डाला। अलबत्ता, यह लेज़र पुंज दर्दनाक ज़रूर था। जब बंदर अपने चेहरे पर पड़ रहे लेज़र के धब्बे को छूते थे तो उन्हें पारितोषिक के रूप में भोजन दिया जाता था।

इस तरह करीब 12-38 दिन तक लेज़र उपचार के बाद इन बंदरों को बेहोश करके उनके चेहरे पर एक रंगीन निशान बना दिया गया। आइने में अपने चेहरे पर निशान को देखकर उन्होंने खुद अपने चेहरे पर उस निशान को छूने की कोशिश की। गोंग का दावा है कि इससे पता चलता है कि वे यह समझ पा रहे थे कि जो चेहरा दर्पण में दिख रहा है वह वास्तव में खुद उनका ही चेहरा है।

बहरहाल, अन्य वैज्ञानिक सहमत नहीं हैं। मसलन, स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क के गॉर्डन गैलप का कहना है कि दरअसल बंदरों ने अपने अक्स को नहीं पहचाना बल्कि वही किया जिसका प्रशिक्षण उन्हें कई दिनों तक दिया गया था। उनका सवाल है कि यदि आईक्यू टेस्ट से पहले कुछ बच्चों को पूरा पर्चा रटवा दिया जाए और वे सारे जवाब सही दे दें तो क्या उन्हें अधिक बुद्धिमान मान लिया जाएगा? गैलप ने पहले इसी तरह के प्रयोग चिम्पैंज़ी पर भी किए थे।

कुछ अन्य वैज्ञानिकों का मत है कि मात्र यह समझ पाना कि दर्पण में जो कुछ दिख रहा है उसका खुद से कुछ सम्बंध है, आत्म चेतना का परिचायक नहीं है। और इससे यह तो कदापि नहीं माना जा सकता कि इन प्राणियों में यह चेतना है कि वे यह समझ सकें कि उनके जैसे अन्य प्राणियों का दृष्टिकोण अलग भी हो सकता है। दर्पण में खुद के अक्स को टटोलना सिर्फ यह साबित करता है कि वह प्राणी दर्पण में खुद को पहचान सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***